Indian Streams Research Journal ISSN 2230-7850
Volume-3, Issue-6, July-2013

वृद्धजन के विचार (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

Narendra Kumar Singh
"Assistant" B.R.A.Bihar University, Muzaffarpur.

सारांश : आज हमारा देश प्रगति के पथ पर निरंतर अग्रसर है और चहुंमुखी विकास कर रहा है। हम समाज के हर क्षेत्र में अपनी नई पहचान स्थापित कर रहे हैं। एक समय था जब भारतीय समाज में रिश्तों की जड़ें काफी सशक्त हुआ करती थीं। परन्तु आज उनमें खोखलापन आ गया है। हम बड़े–बुजुर्गों का सम्मान करना अपना अपमान समझ रहे हैं। उन्हें परिवार की मुख्य धारा से अलग समझा जाने लगा है। युवा उन्हें मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक बोझ समझने लगे हैं। ऐसे में परिवार के सभी सदस्य यथा बच्चे, युवा एवं बुजुर्गों का आपसी तालमेल नहीं बन पा रहा एवं बुजुर्ग उपेक्षित समझे जाने लगे हैं। मीडिया में आई खबरों से स्पष्ट होता रहता है कि असहाय माता–पिता का भी बंटवारा किया जाना, उनकी देखभाल के लिये रखे गये सेवकों द्वारा उनकी हत्या किया जाना, दर–दर भटकते वृद्धों को वृद्धाश्रम में जीने को मजबूर होना आदि घटनाएँ सामान्य होती जा रही हैं। यह हमारे भारतीय समाज के लिये गंभीर चिन्ता का विषय है। बुजुर्गों की देख–रेख करना आज हमारे लिये चुनौती बन गई है। सदियों से हमारे परम्परागत मूल्यों में वृद्धजन को सम्मान देना व देखभाल करना परम् कर्त्तव्य माना जाता रहा है, परन्तु आज हम उन कर्त्तव्यों को भूलते जा रहे हैं। वृद्धावस्था मानव के जीवन की वह अवस्था है, जिसमें उनकी उम्र औसतकाल के समीप या उससे अधिक हो जाती है। वृद्धावस्था धीरे–धीरे आने वाली अवस्था है, स्वाभाविक व प्राकृतिक घटना है।

प्रस्तावना

इसे कोई भी व्यक्ति नकार नहीं सकता है, यह जीवन का सत्य है। आज का मानव पूर्णतः मशीन में तब्दील हो गया है, जिसमें लोगों की दिनचर्या सुबह से आरंभ होकर देर रात तक यंत्रवत् चलती है तथा अपने लक्ष्य को पूरा करने पर ही रूकती है। यह अच्छी बात है, किन्तु ऐसा करने में हम अपने नैतिक कर्त्तव्यों की बलि चढ़ाते जा रहे हैं। लोग निजी जीवन में सिमट कर स्वार्थी होते जा रहे हैं। यह एक ऐसी अवस्था होती है जिसमें वृद्ध व्यक्ति अपने बच्चों से शारीरिक, नैतिक, वित्तीय एवं भावनात्मक सहारे की जरूरत महसूस करते हैं। जब हम छोटे थे तब अपने माता–पिता से अपेक्षा रखते थे और जब अब वे हमसे अपेक्षा रखते हैं तो हम कह देते हैं कि आपका जो कर्त्तव्य था, आपने किया। कृपया मेरे निजी जीवन में दखल न दें। वक्त बदलने के साथ–साथ सामाजिक परिवर्तन भी हुए हैं, निःसंदेह इसका प्रभाव समाज पर पड़ा है, सामाजिक विचार भी बदला है, पर क्या हम अपनी भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति को भुला दें, जिसके कारण भारत वर्ष सम्पूर्ण विश्व का गुरू माना जाता रहा है। आज वरिष्ठ नागरिकों को अपने परिवार से स्नेह, सहायता तथा सहारा औपचारिकता के रूप में मिलना बहुत जरूरी नहीं अपितु ये सभी भावनात्मक व्यवहार में अनिवार्य होने चाहिए। विश्व में वृद्ध नागरिकों की संख्या करीब 60 करोड़ है। सम्पूर्ण भारत में वृद्ध नागरिकों की कुल जनसंख्या 9 करोड़ से अधिक है। जिसमें शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्धों की जनसंख्या कई गुणा ज्यादा है। वर्तमान में पश्चिमी देशों में वृद्धों की औसत आयु 80 वर्ष है जबकि भारत में 65 वर्ष है।

आज सभी मानवजाति को गरिमामय एवं सफल जीवन जीने हेतु विशेष अधिकार प्राप्त है, जिसके अन्तर्गत बच्चे, युवावर्ग, बड़े–बुजुर्ग इत्यादि सभी शामिल हैं, जिसे मानवाधिकार के रूप में जाना जाता है परन्तु आज के इस आधुनिक भौतिकवादी समाज की सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि मनुष्य अपने बड़े–बुजुर्ग के प्रति व्यवहार को भूलते जा रहे हैं। हमारे वृद्धजन हमसे दूर होते जा रहे हैं। उनके घटते आदर, सम्मान और असुरक्षा की भावना हमारे समक्ष एक चुनौती बनकर खड़ी है। अगर हम इस चुनौती से विवेकपूर्ण स्थिति में नही निपटे तो भविष्य में हमारा पारिवारिक–सामाजिक ढांचा बुरी तरह चरमरा जायेगा और हम मानव नहीं दानव जाति के रूप में स्वार्थ से लिप्त हो मात्र अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ते नजर आयेंगे।

ऐसे में समाज के विभिन्न वर्गों एवं जातियों के बुजुर्गों की वर्तमान परिस्थिति को देखकर उनमें सुधार लाया जा सकता है। मुजफ्फरपुर नगर के हर वर्ग/जाति से चयनित कई व्यक्तियों से निदर्शन पद्धति के अन्तर्गत अनुसूची के माध्यम से व्यक्तिगत साक्षात्कार कर निर्धारित कई प्रश्नों के उत्तर संग्रह कर आधुनिक शहरी समाज में बुजुर्गों के साथ होने वाले उपेक्षापूर्ण व्यवहार के कारणों को समझकर उनपर होने वाले उपेक्षापूर्ण व्यवहार से उन्हें बचाया जा सकता है। बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर नगर के लोगों में व्याप्त बुजुर्गों के प्रति अनादर के भाव को जानकर उनके जीवन को खुशहाल एवं बेहतर बनाया जा सकता है।

शोध का क्षेत्र :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर नगर के सभी वर्गों/जातियों के लोगों का अध्ययन किया गया है।

शोध का उद्देश्य :– समाज कल्याण के साथ–साथ शैक्षणिक उद्देश्यों की भी पूर्ति संभव हो सके।

शोध की विधि :– समाज में सभी वर्गों/जातियों के लोगों की शैक्षिक स्थिति को समझकर उनमें बुजुर्गों के प्रति प्रेम, निष्ठा, आदर, समभाव आदि का अध्ययन करना। प्रस्तुत शोध–पत्र के उद्देश्यों की प्रकृति के आधार पर सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

न्यादर्श चयन :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में बिहार प्रान्त के मुजप्फरपुर नगर के सभी वर्गों/जातियों के 198 व्यक्तियों का चयन यादृच्छिकी न्यादर्श विधि के माध्यम से किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण :– प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के संकलन हेतु स्वयं निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है जिसमें समाज के सभी वर्गों/जातियों के लोगों से जुड़े कुल 9 प्रश्न रखे गये हैं।

सांख्यिकी अभिप्रयोग :– प्रदत्तों का संकलन कर उनके विश्लेषण हेतु सांख्यिकी की प्रतिशत विधि का उपयोग कर निष्कर्ष प्राप्त किये गये हैं।

प्रदत्तों की व्याख्या एवं विश्लेषण :– बिहार राज्य के मुजफ्फरपुर नगर के 198 उत्तरदाताओं का तथ्य संकलन साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया है।

आंकड़ों का सारणीकरण एवं विश्लेषण :– प्रस्तुत अध्ययन एक शैक्षणिक अनुसंधान कार्य है। मैंने अनुसूची के रूप में अपने उत्तरदाताओं के पास जाकर उनसे प्रश्न पूछे तथा प्राप्त उत्तरों को नोट किया। इस विधि के अलावा मैंने प्रत्यक्ष साक्षात्कार के क्रम में अवलोकित कुछ तथ्य भी एकत्रित किये। इन तथ्यों को संग्रहित करने के बाद मैंने मास्टर चार्ट बनाया ताकि तथ्यों के सारणीकरण एवं विश्लेषण में मदद मिल सके। प्रस्तुत विभिन्न सारणियों में बुजुर्ग उत्तरदाताओं से प्राप्त उनकी व्यक्तिगत सूचना एवं उनकी मनोवृत्ति को दर्शाया गया है।

आयु के आधार पर उत्तरदाताओं की स्थिति

शोध अध्ययन में सम्मिलित विभिन्न आयु समूह के उत्तरदाताओं की स्थिति 60 से 65 वर्ष, 66–70 वर्ष, 71 से 75 वर्ष, 76 से 80 वर्ष एवं 80 वर्ष से ऊपर है जिसका प्रतिशत क्रमशः 31.31, 25.25, 26.26, 11.11 एवं 06.06 है।

लिंग के आधार पर उत्तरदाताओं की स्थिति

इसमें पुरूष एवं स्त्री का प्रतिशत क्रमशः 57.07 एवं 42.92 है।

उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति

इसमें विवाहित, अविवाहित, विधवा एवं विधुर का प्रतिशत क्रमशः 45.45 10.10, 24.74 एवं 19.69 है।

उत्तरदाताओं के पारिवारिक स्वरूप

सम्मिलित परिवारों में संयुक्त परिवार एवं एकांकी परिवार का प्रतिशत क्रमशः 28.28 एवं 71.71 है।

धर्म के आधार पर उत्तरदाताओं की स्थिति

सम्मिलित विभिन्न धर्मों के उत्तरदाताओं में हिन्दु धर्म, मुस्लिम धर्म, सिक्ख धर्म एवं क्रिश्चन धर्म का प्रतिशत क्रमशः 55.55, 29.29, 07.07 एवं 08.08 है जबकि जैन एवं बौद्ध धर्म के एक भी उत्तरदाता सम्मिलित नहीं हैं।

जाति के आधार पर उत्तरदाताओं के परिचय

सम्मिलित विभिन्न जाति के उत्तरदाताओं में राजपूत, भूमिहार, ब्राह्मण, कायस्थ, यादव, कोयरी, कुर्मी, वैश्य, बढ़ई, दुसाध, चमार, डोम, मेहतर, मुस्लिम, सिक्ख एवं ईसाई हैं जिनका प्रतिशत क्रमशः 5.05, 5.05, 2.52, 5.05, 4.04, 2.52, 3.53, 5.05, 5.05, 5.05, 5.05, 2.52, 5.05, 29.29, 7.07 एवं 8.08 है।

शिक्षा के आधार पर उत्तरदाताओं के परिचय

सम्मिलित विभिन्न उत्तरदाताओं की शैक्षणिक योग्यता में निरक्षर, साक्षर, सप्तम वर्ग, मैट्रिक एवं इण्टर, स्नातक, स्नातकोत्तर एवं तकनीकी शिक्षा है जिसका प्रतिशत क्रमशः 10.60, 13.63, 21.71, 24.74, 11.11, 9.09 एवं 9.09 है।

पेशा के आधार पर उत्तरदाताओं के परिचय

विभिन्न पेशा के उत्तरदाताओं में सरकारी नौकरी, वकील, डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षक, प्राइवेट, व्यापार, बेरोजगार एवं अन्य सम्मिलित हैं जिनका प्रतिशत क्रमशः 20.20, 9.09, 3.03, 6.06, 21.21, 14.14, 10.60, 9.09 एवं 6.56 है।

आय के आधार पर उत्तरदाताओं की स्थिति

इसमें नगण्य आय से लेकर 10,000 रूपये मासिक से ऊपर आय वाले उत्तरदाता भी सम्मिलित हैं। विभिन्न आय–समूह में नगण्य आय वाले, 2000 तक, 2000–4000 तक, 4000–6000, 6000–8000, 8000–10,000 एवं 10,000 से ऊपर आय वाले हैं जिनका प्रतिशत क्रमशः 4.08, 6.06, 9.09, 12.12, 15.15, 22.22 एवं 31.31 है।

कुल 198 उत्तरदाताओं की उपरोक्त विभिन्न परिस्थितियों के मद्देनजर जाति को आधार मानकर चयनित 9 प्रश्नों के माध्यम से यह देखा जा रहा है कि बदलते परिवेश में वृद्धजन की क्या–क्या समस्याएं हैं–

तालिका–1
क्या आप वृद्ध होने के कारण अपने आपको उपेक्षित महसूस करते हैं?

क्र0 सं0	जाति	उत्तरदाता	हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
1.	राजपूत	10	7	3.53	3	1.51
2.	भूमिहार	10	6	3.03	4	2.02
3.	ब्राह्मण	5	3	1.51	2	1.01
4.	कायस्थ	10	9	4.54	1	0.5
5.	यादव	8	5	2.52	3	1.51
6.	कोयरी	5	4	2.02	1	0.5
7.	कुर्मी	7	5	2.52	2	1.01
8.	वैश्य	10	5	2.52	5	2.52
9.	बढ़ई	10	7	3.53	3	1.51
10.	दुसाध	10	8	4.04	2	1.01
11.	चमार	10	6	3.03	4	2.02
12.	डोम	5	4	2.02	1	0.5
13.	मेहतर	10	7	3.53	3	1.51
14.	मुस्लिम	58	41	20.7	17	8.58
15.	सिक्ख	14	10	5.05	4	2.02
16.	ईसाई	16	11	5.55	5	2.52
	कुल	198	138	69.64	60	30.25

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि राजपूत के 3.53 प्रतिशत, भूमिहार के 3.03, ब्राह्मण 1.51, कायस्थ 4.54, यादव 2.52, कोयरी 2.02, कुर्मी 2.52, वैश्य 2.52, बढ़ई 3.53, दुसाध 4.04, चमार 3.03, डोम 2.02, मेहतर 3.53, मुस्लिम 20.7, सिक्ख 5.05 एवं ईसाई 5.55 प्रतिशत उत्तरदाता वृद्ध होने के कारण अपने को परिवार एवं समाज में उपेक्षित महसूस करते हैं जबकि राजपूत के 1.51, भूमिहार 2.02, ब्राह्मण 1.01, कायस्थ 0.5, यादव 1.51, कोयरी 0.5, कुर्मी 1.01, वैश्य 2.52, बढ़ई 1.51, दुसाध 1.01, चमार 2.02, डोम 0.5, मेहतर 1.51, मुस्लिम 8.58, सिक्ख 2.02 एवं ईसाई 2.52 प्रतिशत उत्तरदाता उपेक्षित महसूस नहीं करते हैं।

तालिका–2
क्या आपको वृद्धावस्था पेंशन मिलता है?

क्र0 सं0	जाति	उत्तरदाता	हाँ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
1.	राजपूत	10	2	1.01	8	4.04
2.	भूमिहार	10	3	1.51	7	3.53
3.	ब्राह्मण	5	3	1.51	2	1.01
4.	कायस्थ	10	6	3.03	4	2.02
5.	यादव	7	4	2.02	3	1.51
6.	कोयरी	5	3	1.51	2	1.01
7.	कुर्मी	7	5	2.52	2	1.01
8.	वैश्य	10	4	2.02	6	3.03
9.	बढ़ई	10	6	3.03	4	2.02
10.	दुसाध	10	8	4.04	2	1.01
11.	चमार	10	9	4.54	1	0.5
12.	डोम	5	5	2.52	0	0.0
13.	मेहतर	11	9	4.54	2	1.01
14.	मुस्लिम	57	48	24.20	9	4.54
15.	सिक्ख	16	6	3.03	10	5.05
16.	ईसाई	15	9	4.54	6	3.03
	कुल	198	130	65.65	68	34.34

तालिका–2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि राजपूत के 1.01, भूमिहार1.51, ब्राह्मण 1.51, कायस्थ 3.03, यादव 2.02, कोयरी 1.51, कुर्मी, 2.52, वैश्य 2.02, बढ़ई 3.03, दुसाध 4.04, चमार 4.54, डोम 2.52, मेहतर 4.54, मुस्लिम 24.20, सिक्ख 3.03 एवं ईसाई के 4.54 प्रतिशत उत्तरदाताओं को वृद्धावस्था पेंशन मिलता है जबकि राजपूत के 4.04, भूमिहार 3.53, ब्राह्मण 1.01, कायस्थ 2.02, यादव 1.51, कोयरी 1.01, कुर्मी 1.01, वैश्य 3.03, बढ़ई 2.02, दुसाध 1.01, चमार 0.5, डोम 00.00, मेहतर 1.01, मुस्लिम 4.54, सिक्ख 5.05 एवं ईसाई के 3.03 प्रतिशत उत्तरदाताओं को वृद्धावस्था पेंशन नहीं मिलता है।

तालिका–3
अगर आपको वृद्धावस्था पेंशन मिलता है तो उसे स्वयं खर्च करते हैं अथवा परिवार के सदस्य?

क्र0 सं0	जाति	उत्तरदाता	स्वयं	प्रतिशत	परिवार के सदस्य	प्रतिशत
1.	राजपूत	2	1	0.5	1	0.5
2.	भूमिहार	3	2	1.01	1	0.5
3.	ब्राह्मण	3	2	1.01	1	0.5
4.	कायस्थ	6	5	2.52	1	0.5
5.	यादव	7	5	2.52	2	1.01
6.	कोयरी	3	2	1.01	1	0.5
7.	कुर्मी	5	4	2.02	1	0.5
8.	वैश्य	4	4	2.02	0	0.0
9.	बढ़ई	6	5	2.52	1	0.5
10.	दुसाध	8	6	3.03	2	1.01
11.	चमार	9	7	3.53	2	1.01
12.	डोम	5	4	2.02	1	0.5
13.	मेहतर	9	7	3.53	2	1.01
14.	मुस्लिम	48	29	14.60	19	9.59
15.	सिक्ख	4	3	1.51	1	0.5
16.	ईसाई	8	7	3.53	1	0.5
	कुल	130	93	46.96	37	18.68

तालिका–3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि जिन उत्तरदाताओं को वृद्धावस्था पेंशन मिलता है उनमें से राजपूत के 0.5 प्रतिशत, भूमिहार के 1.01, ब्राह्मण 1.01, कायस्थ 2.52, यादव 2.52, कोयरी 1.01, कुर्मी 2.02, वैश्य 2.02, बढ़ई 2.52, दुसाध 3.03, चमार 3.53, डोम 2.02, मेहतर 3.53, मुस्लिम 14.60, सिक्ख 1.51 एवं ईसाई के 3.53 प्रतिशत उत्तरदाता वृद्धावस्था पेंशन को स्वयं खर्च करते हैं जबकि राजपूत के 0.5, भूमिहार के 0.5, ब्राह्मण 0.5, कायस्थ 0.5, यादव 1.01, कोयरी 0.5, कुर्मी 0.5, वैश्य 00.00, बढ़ई 0.5, दुसाध 1.01, चमार 1.01, डोम 0.5, मेहतर 1.01, मुस्लिम 9.59, सिक्ख 0.5 एवं ईसाई के 0.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं के वृद्धावस्था पेंशन को उनके परिवार के लोगों के द्वारा खर्च किया जाता है।

तालिका–4
आपको पूर्व की भांति समय पर भोजन प्राप्त होते हैं अथवा नहीं?

क्र0 सं0	जाति	उत्तरदाता	हां	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
1.	राजपूत	10	8	4.04	2	1.01
2.	भूमिहार	10	7	3.53	3	1.51
3.	ब्राह्मण	5	3	1.51	2	1.01
4.	कायस्थ	10	7	3.53	3	1.51
5.	यादव	8	6	3.03	2	1.01
6.	कोयरी	5	3	1.51	2	1.01
7.	कुर्मी	7	4	2.02	3	1.51
8.	वैश्य	10	6	3.03	4	2.02
9.	बढ़ई	10	7	3.53	3	1.51
10.	दुसाध	10	5	2.52	5	2.52
11.	चमार	10	6	3.03	4	2.02
12.	डोम	5	3	1.51	2	1.01
13.	मेहतर	10	6	3.03	4	2.02
14.	मुस्लिम	58	42	21.20	16	8.08
15.	सिक्ख	14	9	4.54	5	2.52
16.	ईसाई	16	10	5.05	6	3.03
	कुल	198	132	66.66	66	33.33

तालिका–4 से स्पष्ट है कि राजपूत के 4.04 प्रतिशत, भूमिहार के 3.53, ब्राह्मण 1.51, कायस्थ 3.53, यादव 3.03, कोयरी, 1.51, कुर्मी 2.02, वैश्य 3.03, बढ़ई 3.53, दुसाध 2.52, चमार 3.03, डोम 1.51, मेहतर 3.03, मुस्लिम 21.20, सिक्ख 4.54 एवं ईसाई के 5.05 प्रतिशत उत्तरदाताओं को परिवार के द्वारा समय पर भोजन उपलब्ध कराये जाते हैं जबकि राजपूत के 1.01, भूमिहार 1.51, ब्राह्मण 1.01, कायस्थ 1.51, यादव 1.01, कोयरी 1.01, कुर्मी 1.51, वैश्य 2.02, बढ़ई 1.51, दुसाध 2.52, चमार 2.02, डोम 1.01, मेहतर 2.02, मुस्लिम 8.08, सिक्ख 2.52 एवं ईसाई के 3.03 प्रतिशत उत्तरदाताओं को परिवार के द्वारा समय पर भोजन प्राप्त नहीं होते हैं।

तालिका–5
परिवार के सदस्य आपकी देखभाल सही तरीके से करते हैं?

क्र0 सं0	जाति	उत्तरदाता	हां	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
1.	राजपूत	10	4	2.02	6	3.03
2.	भूमिहार	10	3	1.51	7	3.53
3.	ब्राह्मण	5	2	1.01	3	1.51
4.	कायस्थ	10	2	1.01	8	4.04
5.	यादव	8	3	1.51	5	2.52
6.	कोयरी	5	2	1.01	3	1.51
7.	कुर्मी	7	4	2.02	3	1.51
8.	वैश्य	10	4	2.02	6	3.03
9.	बढ़ई	10	5	2.52	5	2.52
10.	दुसाध	10	4	2.02	6	3.03
11.	चमार	10	3	1.51	7	3.53
12.	डोम	5	2	1.01	3	1.51
13.	मेहतर	10	4	2.02	6	3.03
14.	मुस्लिम	58	15	7.57	43	21.78
15.	सिक्ख	14	5	2.52	9	4.54
16.	ईसाई	16	6	3.03	10	5.05
	कुल	198	68	34.34	130	65.65

तालिका–5 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि राजपूत के 2.02 प्रतिशत, भूमिहार के 1.51, ब्राह्मण 1.01, कायस्थ 1.01, यादव 1.51, कोयरी 1.01, कुर्मी 2.02, वैश्य2.02,बढ़ई 2.52, दुसाध 2.02, चमार 1.51, डोम 1.01, मेहतर 2.02, मुस्लिम 7.57, सिक्ख 2.52 एवं ईसाई के 3.03 प्रतिशत उत्तरदाताओं की देख–रेख परिवार के सदस्यों द्वारा सही तरीके से की जाती है जबकि राजपूत के 3.03, भूमिहार 3.53,ब्राह्मण 1.51, कायस्थ 4.04, यादव 2.52, कोयरी 1.51,कुर्मी 1.51, वैश्य 3.03, बढ़ई 2.52, दुसाध 3.03, चमार 3.53, डोम 1.51, मेहतर 3.03, मुस्लिम 21.78, सिक्ख 4.54 एवं ईसाई के 5.05 प्रतिशत उत्तरदाताओं की परिवार के सदस्यों द्वारा सही तरीके से देखभाल नहीं की जाती है।

तालिका–6
अगर आप बीमार पड़ते हैं तो उपचार हेतु डॉक्टर के पास स्वयं जाते हैं या परिवार के सदस्य ले जाते हैं?

क्र0 सं0	जाति	उत्तरदाता	स्वयं	प्रतिशत	परिवार के सदस्य	प्रतिशत
1.	राजपूत	10	3	1.51	7	3.53
2.	भूमिहार	10	4	2.02	6	3.03
3.	ब्राह्मण	5	1	0.5	4	2.02
4.	कायस्थ	10	4	2.02	6	3.03
5.	यादव	8	2	1.01	6	3.03
6.	कोयरी	5	1	0.5	4	2.02
7.	कुर्मी	7	2	1.01	5	2.52
8.	वैश्य	10	4	2.02	6	3.03
9.	बढ़ई	10	3	1.51	7	3.53
10.	दुसाध	10	4	2.02	6	3.03
11.	चमार	10	5	2.52	5	2.52
12.	डोम	5	2	1.01	3	1.51
13.	मेहतर	10	3	1.51	7	3.53
14.	मुस्लिम	58	18	9.09	40	20.20
15.	सिक्ख	14	5	2.52	9	4.54
16.	ईसाई	16	6	3.03	10	5.05
	कुल	198	67	33.83	131	66.16

तालिका–6 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि राजपूत के 1.51 प्रतिशत, भूमिहार के 2.02, ब्राह्मण 0.5, कायस्थ 2.02, यादव 1.01, कोयरी 0.5,कुर्मी1.01,वैश्य2.02,बढ़ई 1.51, दुसाध 2.02, चमार 2.52, डोम 1.01, मेहतर 1.51, मुस्लिम 9.09, सिक्ख 2.52 एवं ईसाई के 3.03 प्रतिशत उत्तरदाताओं को बीमार पड़ने पर ईलाज हेतु डॉक्टर के पास स्वयं जाना पड़ता है जबकि राजपूत के 3.53, भूमिहार 3.03,ब्राह्मण 2.02, कायस्थ 3.03, यादव 3.03, कोयरी 2.02, कुर्मी 2.52, वैश्य 3.03, बढ़ई 3.53, दुसाध 3.03, चमार 2.52, डोम 1.51, मेहतर 3.53, मुस्लिम 20.20, सिक्ख 4.54 एवं ईसाई के 5.05 प्रतिशत उत्तरदाताओं के बीमार पड़ने पर उपचार हेतु डॉक्टर के पास परिवार के सदस्यों द्वारा ले जाया जाता है।

तालिका–7
क्या विभिन्न अवसरों पर आपकी संतान आपसे किसी बात पर विचार लेती हैं?

क्र0 सं0	जाति	उत्तरदाता	हॉ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
1.	राजपूत	10	2	1.01	8	4.04
2.	भूमिहार	10	3	1.51	7	3.53
3.	ब्राह्मण	5	1	0.5	4	2.02
4.	कायस्थ	10	2	1.01	8	4.04
5.	यादव	8	3	1.51	5	2.52
6.	कोयरी	5	2	1.01	3	1.51
7.	कुर्मी	7	2	1.01	5	2.52
8.	वैश्य	10	3	1.51	7	3.53
9.	बढ़ई	10	4	2.02	6	3.03
10.	दुसाध	10	4	2.02	6	3.03
11.	चमार	10	3	1.51	7	3.53
12.	डोम	5	2	1.01	3	1.51
13.	मेहतर	10	3	1.51	7	3.53
14.	मुस्लिम	58	38	19.19	20	10.10
15.	सिक्ख	14	4	2.02	10	5.05
16.	ईसाई	16	5	2.52	11	5.55
	कुल	198	81	40.90	117	59.09

तालिका–7 के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि राजपूत के 1.01 प्रतिशत, भूमिहार के1.51, ब्राह्मण 0.5, कायस्थ 1.01, यादव 1.51, कोयरी 1.01, कुर्मी 1.01, वैश्य 1.51, बढ़ई 2.02, दुसाध 2.02, चमार 1.51, डोम 1.01, मेहतर 1.51, मुस्लिम 19.19, सिक्ख 2.02 एवं ईसाई के 2.52 प्रतिशत उत्तरदाताओं से उनकी संतान विभिन्न अवसरों पर उनसे विचार लेती हैं जबकि राजपूत के 4.04, भूमिहार 3.53, ब्राह्मण 2.02, कायस्थ 4.04, यादव 2.52, कोयरी 1.51, कुर्मी 2.52, वैश्य 3.53, बढ़ई 3.03, दुसाध 3.03, चमार 3.53, डोम 1.51, मेहतर 3.53, मुस्लिम 10.10, सिक्ख 5.05 एवं ईसाई के 5.55 प्रतिशत उत्तरदाताओं से विभिन्न अवसरों पर उनकी संतान उनसे विचार नहीं लेती हैं।

तालिका–8
क्या आपकी संतान अपने बच्चों की शादी के निर्णय में आपकी सलाह लेती हैं?

क्र0 सं0	जाति	उत्तरदाता	हॉ	प्रतिशत	नहीं	प्रतिशत
1.	राजपूत	10	2	1.01	8	4.04
2.	भूमिहार	10	3	1.51	7	3.53
3.	ब्राह्मण	5	2	1.01	3	1.51
4.	कायस्थ	10	2	1.01	8	4.04
5.	यादव	8	4	2.02	4	2.02
6.	कोयरी	5	3	1.51	2	1.01
7.	कुर्मी	7	2	1.01	5	2.52
8.	वैश्य	10	4	2.02	6	3.03
9.	बढ़ई	10	3	1.51	7	3.53
10.	दुसाध	10	3	1.51	7	3.53
11.	चमार	10	4	2.02	6	3.03
12.	डोम	5	2	1.01	3	1.51
13.	मेहतर	10	4	2.02	6	3.03
14.	मुस्लिम	58	32	16.16	26	13.13
15.	सिक्ख	14	4	2.02	10	5.05
16.	ईसाई	16	6	3.03	10	5.05
	कुल	198	80	40.40	118	59.59

तालिका–8 से स्पष्ट होता है कि राजपूत के 1.01 प्रतिशत, भूमिहार के 1.51, ब्राह्मण 1.01, कायस्थ 1.01, यादव 2.02, कोयरी 1.51, कुर्मी 1.01, वैश्य 2.02, बढ़ई 1.51, दुसाध 1.51, चमार 2.02, डोम 1.01, मेहतर 2.02, मुस्लिम 16.16, सिक्ख 2.02 एवं ईसाई के 3.03 प्रतिशत उत्तरदाताओं से उनकी संतान अपने बच्चों की शादी के निर्णय में उनकी सलाह लेती हैं जबकि राजपूत के 4.04, भूमिहार 3.53, ब्राह्मण 1.51, कायस्थ 4.04, यादव 2.02, कोयरी 1.01, कुर्मी 2.52, वैश्य 3.03, बढ़ई 3.53, दुसाध 3.53, चमार 3.03, डोम 1.51, मेहतर 3.03, मुस्लिम 13.13, सिक्ख 5.05 एवं ईसाई के 5.05 प्रतिशत उत्तरदाताओं से उनकी संतान अपने बच्चों की शादी के निर्णय में उनसे सलाह नहीं लेती हैं।

तालिका–9
अगर परिवार के सदस्य आपके साथ कुछ गलत व्यवहार करते हैं तो आप क्या करते हैं?

क्र0 सं0	जाति	उत्तरदाता	चुपचाप सहन करते हैं	:	शिकायत करते हैं	:	न्यायालय का सहारा लेते हैं	:
1.	राजपूत	10	7	3.53	2	1.01	1	0.5
2.	भूमिहार	10	8	4.04	1	0.5	1	0.5
3.	ब्राह्मण	5	3	1.51	1	0.5	1	0.5
4.	कायस्थ	10	7	3.53	1	0.5	2	1.01
5.	यादव	8	5	2.52	2	1.01	1	0.5
6.	कोयरी	5	3	1.51	1	0.5	1	0.5
7.	कुर्मी	7	4	2.02	2	1.01	1	0.5
8.	वैश्य	10	7	3.53	2	1.01	1	0.5
9.	बढ़ई	10	7	3.53	2	1.01	1	0.5
10.	दुसाध	10	6	3.03	2	1.01	2	1.01
11.	चमार	10	6	3.03	3	1.51	1	0.5
12.	डोम	5	2	1.01	2	1.01	1	0.5
13.	मेहतर	10	6	3.03	3	1.51	1	0.5
14.	मुस्लिम	58	31	15.65	20	10.10	7	3.53
15.	सिक्ख	14	10	5.05	3	1.51	1	0.5
16.	ईसाई	16	11	5.55	4	2.02	1	0.5
	कुल	198	123	62.12	24	12.12	51	25.75

तालिका–9 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि राजपूत के 3.53 प्रतिशत, भूमिहार के 4.04, ब्राह्मण 1.51, कायस्थ 3.53, यादव 2.52, कोयरी 1.51, कुर्मी 2.02, वैश्य 3.53, बढ़ई 3.53, दुसाध 3.03, चमार 3.03, डोम 1.01, मेहतर 3.03, मुस्लिम 15.65, सिक्ख 5.05 एवं ईसाई के 5.55 प्रतिशत उत्तरदाता उनके परिवार के सदस्य द्वारा उनके साथ कुछ गलत व्यवहार करने पर वे चुपचाप सहन करते हैं। वहीं राजपूत के 1.01, भूमिहार 0.5, ब्राह्मण 0.5, कायस्थ 0.5, यादव 1.01,कोयरी 0.5, कुर्मी 1.01, वैश्य 1.01, बढ़ई 1.01, दुसाध 1.01, चमार 1.51, डोम 1.01, मेहतर 1.51, मुस्लिम 10.10, सिक्ख 1.51 एवं ईसाई के 2.02 प्रतिशत उत्तरदाता शिकायत करते हैं जबकि राजपूत के 0.5, भूमिहार 0.5, ब्राह्मण 0.5, कायस्थ 1.01, यादव 0.5, कोयरी 0.5, कुर्मी 0.5, वैश्य 0.5, बढ़ई 0.5, दुसाध 1.01, चमार 0.5, डोम 0.5, मेहतर 0.5, मुस्लिम 3.53, सिक्ख 0.5 एवं ईसाई के 0.5 प्रतिशत उत्तरदाता न्यायालय का सहारा लेते हैं।

निष्कर्ष

शोध अध्ययन में समाज के बहुतायत बुजुर्ग उपेक्षा के शिकार पाये गये। ज्यादातर बुजुर्ग अपनी ढलती उम्र को एक अभिशाप के रूप में समझते पाये गये। ज्यादातर बुजुर्गों ने अपनी बेटे–बेटियों से बुढ़ापा के कारण संबध में दूरियों को स्वीकार किया। वैसे बुजुर्ग जो सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त हैं, पेंशन के कारण उन्हें आर्थिक परेशानियाँ कम दिखीं पर वैसे बुजुर्ग जो अपने भरण–पोषण के लिये बेटे–बेटियों पर आश्रित हैं उन्हें आर्थिक दृष्टि से काफी तनाव झेलना पड़ता है। सेवानिवृत्त बुजुर्गों को उनके बेरोजगार बेटे–बेटियों द्वारा अपनी आवश्यकता की पूर्ति हेतु रूपयों का एक श्रोत मानते पाया गया। इसीलिए पारिवारिक सदस्यों द्वारा उनकी देख–रेख में कुछ हद तक ध्यान दिया जाता है। मगर जो बुजुर्ग आर्थिक दृष्टि से पूर्णरूपेण अपनी बेटे–बेटियों पर आश्रित हैं उन्हें काफी अपमान भी झेलना पड़ता है, ऐसा अध्ययन के उपरान्त महसूस किया गया।

वस्तुतः भूमण्डलीकरण, औद्योगिकीकरण, परंपरागत भारतीय समाज का आधुनिक समाज में रूपान्तरण तथा संयुक्त से एकांकी होती पारिवारिक संरचना ने वृद्धों की स्थिति दयनीय बना दी है।

सारांशतः समाज में आज वास्तव में सामाजिक, मानसिक, आर्थिक और संस्कारजन्य समस्याओं को झेलने वाला अगर कोई समुदाय है तो वह है– हमारे वरीय बड़े–बुजुर्गों का, जो इस आधुनिक समाज की चकाचौंध में धुमिल–सा होता जा रहा है। आज जरूरत है उनकी इस धुमिलता को मिटाने की, उनके प्रति श्रद्धा रखने की, उनका मान बढ़ाने की न कि उनके जीवन के लिये दान देने की। यदि हम मीडिया की खबरों पर विचार करेंगे तो कई प्रश्न उठेंगे कि क्या यह वही भारत है जिसकी सभ्यता एवं संस्कृति का अनुकरण संपूर्ण विश्व करता था? क्या यह वही भारत है जहाँ पहले किसी परिवार के सदस्यों के दैनिक कार्य बड़े–बुजुर्गों के आशीर्वाद के बिना प्रारम्भ नहीं होते थे? क्या आज वही भारत है जहाँ बड़े–बुजुर्गों की छाया में बच्चे संस्कार व ज्ञान की दीक्षा पाते थे? क्या हम सही दिशा की ओर अग्रसर हैं?इत्यादि।

आधुनिक भौतिकवादी युग में संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवार में बदल रहे हैं। परिवार टूटने के साथ बुजुर्गों की आर्थिक व सामाजिक सुरक्षा में निरंतर गिरावट आ रही है। उन्हें खान–पान व रहन–सहन की समस्या के साथ–साथ पारिवारिक हिंसा व उपेक्षा का दंश भी झेलना पड़ रहा है। अपने ही बच्चों द्वारा उत्पीड़न की शिकायतें आम होती जा रही हैं। आज भारत वर्ष में वृद्धजन की जनसंख्या लगभग 10 करोड़ है जिसमें अधिकांशतः उपेक्षित हैं।

यद्यपि पूरे विश्व में ''ओल्ड एज होम'' जैसी अवधरणाओं का विकास हो रहा है, जहां बुजुर्गों को कुछ हद तक भोजन, आवास व स्वास्थ्य–लाभ तो मिलता है परन्तु भावनात्मक कमियाँ दूर नहीं हो पाती हैं। वे समाज में अपने आप को एक अवांछित नागरिक के रूप में मानने लगते हैं। सरकार द्वारा वृद्धजन की समस्या के निदान हेतु लागू की गयी कई योजनाएँ सामाजिक जाल में उलझकर ध्वस्त हो जाने को मजबूर हैं।

अतः आज हमें इसके लिये जागरूकता अभियान चलाने की जरूरत है, तभी हम वरिष्ठ नागरिकों को उनका वाजिब हक दिलाने में समर्थ हो सकेंगे। आज हमें यह समझने की जरूरत है कि बुढ़ापा अभिशाप नहीं बल्कि अनुभवों की एक विशाल संपदा है, जिसकी कीमत कदापि नहीं चुकाई जा सकती। आज उनके लिये दान की जरूरत नहीं बल्कि मान की जरूरत है, उनके जीवन के बाद श्राद्ध की जरूरत नहीं, बल्कि उनके जीवन–काल में श्रद्धा की जरूरत है, आज उन्हें किसी वस्तु की नहीं बल्कि अपनों के प्यार की जरूरत है।

सुझाव

प्रस्तुत शोध–पत्र के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं–

1.मानव अधिकारों को समाज में स्थापित करने के लिये यह जरूरी है कि मानवीय गरिमा और प्रतिष्ठा के बारे में जन–जागरण लाया जाए।
2.समाज में जागरूकता एवं चेतना लाने, व्याप्त कुरीतियाँ खत्म करने, व्यक्ति के व्यक्तित्व का समग्र विकास करने, मानसिक, नैतिक और शारीरिक विकास करने, समाज में संवेदना, सहिष्णुता, सहभागिता और शान्ति का मार्ग प्रशस्त करने हेतु शिक्षा का प्रसार कर समाज को शिक्षित करने की जरूरत है जिससे कि परिवार, समाज, राज्य, देश और मानव–सभ्यता का विकास संभव हो सके।

ISSN 2230-7850
Volume-3, Issue-6, July-2013

3.शैक्षिक जागरूकता की जरूरत है ताकि हिंसक सामाजिक संघर्ष और संबंधित मानव अधिकारों के हनन रोके जा सकें।

4.समाज और परिवार में वृद्धजन के प्रति लोकतांत्रिक मूल्यों को पोषित करना और उनके लिये संवेदना उत्पन्न करना आवश्यक है ताकि मानव अधिकारों और लोकतंत्र पर आधारित सामाजिक परिवर्तन संभव हो सके।

5.सामाजिक विकास तथा मानवाधिकारों के मध्य समन्वय स्थापित करने की आवश्यकता है।

6.अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मानव–अधिकारों को नियंत्रित करने तथा उनके प्रसार के प्रयासों को गति देना जरूरी है।

7.कार्यशाला में वृद्धजन की स्वतंत्रता का सिद्धान्त, भागीदारी का सिद्धान्त, देखभाल का सिद्धान्त, आत्मपूर्ति का सिद्धान्त, गरिमा का सिद्धान्त इत्यादि पर विस्तार से प्रकाश डाला जाना चाहिए।

8.सुरक्षित वातावरण होना चाहिए ताकि वे भयमुक्त जीवन यापन कर सकें।

9.बढ़ती उम्र में स्वास्थ्य की बढ़ती समस्या के निवारण के लिये सभी सरकारी अस्पतालों में निःशुल्क स्वास्थ्य–परीक्षण एवं दवाइयाँ उपलब्ध कराने की आवश्यक व्यवस्थाएँ सुनिश्चित की जाएँ।

10.समुचित स्तर तक संस्थागत देखभाल की व्यवस्था हों ताकि उन्हें संरक्षण, पुनर्वास, सामाजिक तथा मानसिक प्रेरणा, मानवीय और सुरक्षित वातावरण मिल सके।

11.उन्हें शैक्षणिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और मनोरंजनात्मक संसाधन उपलब्ध कराये जाएँ।

12.युवाओं को बुढ़ापे में होने वाले उनके स्वास्थ्य, पोषण, संरक्षण, आवास, आय की सुरक्षा, रोजगार, परिवार की जिम्मेदारी, सामाजिक जिम्मेदारी एवं शिक्षा का ज्ञान अनिवार्य रूप से दिया जाए ताकि उन्हें बुढ़ापे में अधिक कठिनाइयों का सामना न करना पड़े।

13.अधिक–से–अधिक वृद्धाश्रम की स्थापना प्रत्येक शहर में करायी जाये।

14.राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन योजना की राशि, जो वर्तमान में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र दोनों के लिये 300 रूपये प्रतिमाह हैं, में महँगाई के अनुरूप निरन्तर वृद्धि करने तथा इसके अन्तर्गत अधिक–से–अधिक वृद्धों को शामिल करने हेतु पात्रता के मापदंड को संशोधित करने की आवश्यकता है।

15.अन्नपूर्णा योजना को और व्यापक बनाने की आवश्यकता है ताकि अधिक से अधिक वृद्ध इसके अन्तर्गत आ सकें।

16.वृद्धों की सहायता के लिये स्वयंसेवी संगठनों और गैर सरकारी संस्थाओं का अधिक–से–अधिक सहयोग लिये जाने के लिये सरकार द्वारा इन संगठनों को आर्थिक सहायता आदि देकर और अधिक प्रोत्साहित किया जाए तथा नये–नये संगठनों को भी इस दिशा में कार्य करने हेतु प्रेरित किया जाए।

17.सरकारी अनुदान पर भी सतत् निगरानी की आवश्यकता है ताकि स्वयंसेवी एवं गैर सरकारी संगठन वृद्धों की मदद के नाम पर सरकारी अनुदान का दुरूपयोग न कर सकें।

18.रेल की तरह अन्य यातायात के साधनों में भी वृद्धों के लिये विशेष छूट की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

19.युवकों को भारतीय संस्कृति एवं दर्शन की शिक्षा देने की आवश्यकता है ताकि वे अपनी परंपराओं के अनुरूप बुजुर्गों को आदर दे सकें तथा उनकी समुचित देख–भाल कर सकें।

20.बुजुर्गों को सुरक्षा, स्वास्थ्य, आवास एवं भोजन के अतिरिक्त सम्मानपूर्वक जीवन यापन एवं समुचित देखभाल की आवश्यकता की पूर्ति पर बल दिया जाना चाहिए।

21.परिवारों को अपने बुजुर्ग सदस्यों की देखभाल करने के लिये प्रोत्साहित करना, वृद्धों को सेवा तथा संरक्षण देने वाले लोगों को अनुसंधान तथा प्रशिक्षण की सुविधाएँ उपलब्ध कराना तथा वृद्ध लोगों को ऐसी जानकारी उपलब्ध कराना जिससे वे स्वयं आत्मनिर्भर बन सकें आदि।

22.आज देश, राज्य, समाज और परिवार में वृद्ध व्यक्ति के प्रति जगे उपेक्षाभाव को चिंतन का प्रसंग बनाया जाए।

23.यद्यपि सरकार द्वारा वृद्धों की आवश्यकताओं एवं सुख– सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए कुछ कल्याणकारी कार्यक्रमों, योजनाओं एवं कुछ विशिष्ट सुविधाओं का प्रावधान किया गया है लेकिन वृद्धों की संख्या और आवश्यकताओं के अनुपात में ये प्रावधान एवं व्यवस्थाएँ पर्याप्त नहीं हैं। इस दिशा में और अधिक प्रयासों, व्यवस्था–निर्धरण और पारदर्शिता लाने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूचीः

1. भारतीय सामाजिक व्यवस्था – राम आहूजा
2. भारतीय समाज एवं संस्कृति – गुप्ता एवं शर्मा
3. भारतीय सामाजिक समस्याएँ – जी. आर. मदन
4. भारत में सामाजिक समस्याएँ – गुप्ता एवं शर्मा
5. भारतीय समाज एक विस्तृत अध्ययन – लवानिया एवं जैन
6. जर्नल ऑफ मेडिसीन 1977 – स्निक, जे. एम.
7. टायवल इंडिया 1938 – भीमिक, के. एल.
8. सामाजिक मानवशास्त्र – रविन्द्र नाथ मुखर्जी
9. सामाजिक शोध – जी. के. अग्रवाल
10. सामाजिक सर्वेक्षण – महेन्द्र एवं मीरा
11. सामाजिक अनुसंधान – गुप्ता एवं शर्मा
12. सामाजिक अनुसंधान – राम आहूजा
13. ''हिन्दुस्तान'' हिन्दी दैनिक समाचार–पत्र, मुजफ्फरपुर (बिहार) दिनांक– 30.09.2012, 01.10.2012, 13.01.2013, 18.03.2013.
14. ''दैनिक–जागरण'' हिन्दी दैनिक समाचार–पत्र, मुजफ्फरपुर (बिहार) दिनांक– 30.09.2012, 01.10.2012, 14.02.2013.

Narendra Kumar Singh
"Assistant" B.R.A.Bihar University, Muzaffarpur.